

# डॉ. ऑगस्ट कोकेल, नीतिवचन, सत्र 18

© 2024 अगस्त कोकेल और टेड हिल्डेब्रांट

यह नीतिवचन की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. ऑगस्ट कोकेल हैं। यह सत्र संख्या 18, बुद्धि का चिंतन, नीतिवचन 30:1-17, परिशिष्ट है।

नीतिवचन की पुस्तक पर हमारे चिंतन में आपका स्वागत है।

इन वार्ताओं में, अब हम नीतिवचन के उस बिंदु पर आ गए हैं जिसे हम अक्सर परिशिष्ट के रूप में संदर्भित करते हैं। प्रमुख संग्रह हिजकिय्याह के लोगों की कहावतों के साथ समाप्त होते हैं। फिर उसके बाद, हमारे पास विभिन्न छोटे टुकड़े हैं जो पुस्तक का समापन करते हैं।

इन छोटे टुकड़ों में से पहला अध्याय 30, श्लोक 1 में यहोवा के पुत्र अगुर के शब्द कहा जाता है। नीतिवचन में कुछ चीजें हैं जो थोड़ी रहस्यमय हैं, और हम जानते हैं कि उनमें से एक नीतिवचन में यह पहला पद है 30. यह पूरी तरह से निश्चित नहीं है कि यहोवा के पुत्र अगुर शब्द की उत्पत्ति और अर्थ वास्तव में क्या था। आमतौर पर, इसकी व्याख्या एक राजा या बुद्धिमान व्यक्ति के रूप में की जाती है, और ये उसके विचार और उसके शब्द हैं।

लेकिन ऐसे किसी भी व्यक्ति को किसी भी अर्थ में अन्यथा नहीं जाना जाता है। मध्ययुगीन काल और उससे पहले के कुछ रब्बियों ने इन्हें संभवतः केवल एक सामान्य संज्ञा माना था। तो अगुर वह हो सकता है जो प्रवासी हो, या शायद संग्रहकर्ता हो, और यहोवा वह हो सकता है जो शुद्ध हो।

तो शायद ये सिर्फ किसी ऐसे व्यक्ति के विचार हैं जो नीतिवचन इकट्ठा करता है और शुद्ध है। अब, यह अगला वाक्यांश भी एक है जिसमें विभिन्न अनुवाद हैं। कभी-कभी इसका अनुवाद एक नाम, उकल के रूप में किया जाता है, लेकिन यह लगभग निश्चित लगता है कि इसे विभाजित किया जाना चाहिए, यह शब्द, एक क्रिया के रूप में है, जिसमें कहा गया है, मैं थका हुआ हूँ, मैं थका हुआ हूँ।

ये एक नहीं बल्कि दो हिब्रू शब्द हैं। पहला हिब्रू शब्द है ला, मैं थक गया हूँ और फिर दूसरा है जेकाल, मैं भस्म हो गया हूँ। तो, यह उस थकान की अभिव्यक्ति है जिसे मनुष्य कभी-कभी महसूस कर सकते हैं।

मैं थक गया हूँ, हे भगवान, इथिएल भगवान का हिस्सा है। मैं थक गया हूँ, हे भगवान, मैं थक गया हूँ, और मेरा अंत आ गया है। अब, इस पद के हिब्रू इतिहास में मिथ्या नाम, शब्द, इथिएल, वास्तव में कुछ हद तक गहरा हो गया है जब हम नीतिवचन की पुस्तक को दूसरे संस्करण में देखते हैं जिसमें यह हमारे पास है।

और मैंने पहले ही उल्लेख किया है कि दूसरा संस्करण जिसमें हमारे पास नीतिवचन हैं, ग्रीक अनुवाद में संरक्षित है। अब, हमने कई बार देखा है कि नीतिवचन सदियों से विकसित हुए हैं,

और इसलिए किसी बिंदु पर, इसका स्वरूप अंतिम माना जाता था। लेकिन ग्रीक द्वारा अनुवादित हिब्रू में जिस रूप को अंतिम रूप में अपनाया गया था, वह उस रूप से भिन्न था जिसे हिब्रू पाठ में अंतिम माना जाने लगा क्योंकि इसे यरूशलेम के पतन के बाद और मध्ययुगीन काल में संरक्षित किया गया था।

इसलिए, जैसा कि मैंने यहां इस छोटे से स्पष्टीकरण में नोट किया है, यहां ग्रीक पाठ काफी अलग है, और अध्याय 30 श्लोक 1 में यह कहा गया है, मेरे शब्दों से डरो, बेटे, और उनसे डरकर पश्चाताप करो। अब, इसका उस हिब्रू से कोई संबंध नहीं है जो हमारे पाठ में है, लेकिन ग्रीक पाठ में इसका बहुत अच्छा अर्थ है क्योंकि वहां, एक पूरी तरह से अलग पूर्ववृत्त है। ये वे अध्याय हैं जो पहले आते हैं।

तो, ग्रीक पाठ में, हमारे पास 2422 में समाप्त होने वाले बुद्धिमानों के शब्द हैं। बुद्धिमानों के शब्दों के उस पूरे खंड के तुरंत बाद 31 से 9 में ये शब्द आते हैं, बुद्धिमानों के लिए अतिरिक्त शब्द, संख्यात्मक नीतिवचन. वह संपूर्ण खंड पहले आता है, और फिर पुस्तक 25.1 में हिजकिय्याह के संग्रह के साथ समाप्त होती है। बिल्कुल अलग व्यवस्था.

और एक दूसरे से अधिक सही नहीं है. वे बिल्कुल अलग हैं, और यह कुछ हद तक हमारे पाठ के कुछ रहस्यों में दिखाई देता है। लेकिन यह आगुर का दैवज्ञ है, जैसा कि इसे कहा जाता है, और मूलतः वह जो कर रहा है वह हमारी अज्ञानता पर शोक मना रहा है।

इस तथ्य पर शोक व्यक्त करते हुए कि हम ईश्वर के तरीकों को नहीं जानते हैं। वह कहते हैं कि मैं एक जानवर की तरह था। मैं एक जानवर की तरह था.

मुझे अभी समझ नहीं आया. उपदेशक के विलाप का थोड़ा अंश, क्या आप जानते हैं, जीवन वास्तव में क्या है? हम इस समय और जो कुछ भी चल रहा है उसे कैसे समझें? खैर, हमारे पास जो ज्ञान है उससे हम इसका कोई अर्थ नहीं निकाल सकते। हम नहीं जानते कि ये सब चीजें क्यों होती हैं.

तो फिर यह कैसे संभव है कि हमें जीवित रहना चाहिए? खैर, यही वह प्रश्न है जो उपदेशक पूछता है। और नीतिवचन, कुछ मायनों में, उपदेशक के समान ही प्रश्न पूछ रहा है। यह देखते हुए कि हम इन सभी चीजों को नहीं समझते हैं, फिर हम कैसे जियें? हम अपना आचरण कैसा रखें? सृष्टि सुंदरता और खतरे का चमत्कार है जैसा कि हम इसे अय्यूब की पुस्तक से देखते हैं।

एलीपज ने कहने की कोशिश की, आप जानते हैं, परिस्थितियाँ चाहे जो भी हों, चाहे जितनी भी बुरी हों, ईश्वर हस्तक्षेप करता है और वह अच्छी चीजें घटित करता है। वह वर्षा वगैरह भेजता है। और अय्यूब अपने भाषण में उसे उत्तर देता है।

वह कहता है, हाँ. उनका कहना है कि ईश्वर सबकुछ ठीक करता है। वह भूकंप भेजता है और वह अन्य सभी प्रकार की चीजें भेजता है जो हमें दर्द और परेशानी का कारण बनती हैं।

भगवान के तरीके हमेशा अनुरूप नहीं होते. और इसलिए, अय्यूब, निश्चित रूप से, वह पुस्तक है जो बताती है कि हम न्याय को कैसे जानते हैं? आखिर न्याय क्या है? और मित्र सोचते हैं कि वे जानते हैं कि न्याय क्या है। अय्यूब कहता है, नहीं, तुम ग़लत हो।

दर्द के संबंध में न्याय इस तरह काम नहीं करता। लेकिन तब अय्यूब परमेश्वर की ओर मुड़ता है और कहता है, तुम न्यायपूर्ण नहीं हो। पुस्तक के अध्याय 30 श्लोक 8 से 14 के अंत में परमेश्वर अय्यूब की ओर मुड़ता है।

और वह कहता है, अच्छा, अय्यूब, तू मुझे क्यों नहीं बताता कि न्याय क्या है? और फिर अय्यूब वास्तव में उस बिंदु पर आता है जहां हम पहुंचते हैं, मैं मिट्टी का बच्चा हूं। मैं वास्तव में न्याय के बारे में क्या जानता हूँ? खैर, यह हमारे एगुइरे का विलाप है। उसको नहीं मालूम।

लेकिन उसके पास यह है. वहां सत्य उजागर हुआ है. परमेश्वर ने अपना वचन प्रकट कर दिया है।

यहीं पर मूसा व्यवस्थाविवरण अध्याय 30 को समाप्त करता है। मूसा कहता है, सुनो, यह टोरा, टोरा जोत, जैसा कि हिब्रू में है, यह टोरा प्रकट होता है। इसे आजमाने और पाने के लिए आपको स्वर्ग तक जाने की ज़रूरत नहीं है।

यह यहां पर है। यह आपके साथ है. यह सच है।

और फिर व्यवस्थाविवरण में एक अतिरिक्त सावधानी है। यह मत सोचिए कि आप इसमें यह जोड़ सकते हैं कि आप कुछ ऐसा जानते हैं जो यह नहीं जानता। और इसलिए एगुइरे के पास विनम्रता के लिए यह प्रार्थना है।

और मुझे नीतिवचन अध्याय 30 का यह अंश वास्तव में पसंद है। मुझे बहुत अमीर मत बनने दो। मुझे बहुत पवित्र, बहुत गरीब मत बनने दो।

मुझे मेरी जगह समझने में मदद करें. भजन 73 की तरह थोड़ा-थोड़ा। मुझे दुष्टों से तब तक ईर्ष्या होती रही जब तक कि मैंने बड़ी तस्वीर नहीं देखनी शुरू कर दी।

और मुझे एहसास हुआ, आप जानते हैं, जो लोग लालच और अन्य हानिकारक तरीकों के माध्यम से इतने शक्तिशाली और इतने अमीर बन जाते हैं, उनसे ईर्ष्या नहीं की जानी चाहिए क्योंकि वे हमसे अधिक पीड़ित होते हैं। और मैं इसके उदाहरण पढ़ता रहता हूँ जहां दुनिया के कुछ सबसे अमीर लोग सबसे अधिक दुखी, दयनीय जीवन जीते हैं। और फिर मैं मन ही मन सोचता हूँ, क्या मैं भाग्यशाली हूँ कि मेरे पास उस तरह का पैसा या उस तरह की शक्ति नहीं है क्योंकि उनके पास जो कुछ है वह ईर्ष्या करने लायक नहीं है।

अब, मुझे लगता है कि यहां एक नया खंड शुरू होता है। हमने उन लोगों के बारे में बात की है जो धन्य हैं। यहां हम उन लोगों के बारे में बात करते हैं जो धन्य नहीं हैं।

और निःसंदेह वे लोग धन्य नहीं हैं जो दास की गरिमा को पहचानने से इनकार करते हैं। इसलिए, उदाहरण के लिए, एक दास की अपने स्वामी के प्रति या एक नौकर की अपने स्वामी की आलोचना करना, शब्द के हमारे समकालीन अर्थों में एक दास की नहीं, ऐसा करना, यह अच्छा साबित नहीं होने वाला है। दुष्ट पीढ़ी के पाप, जो लोग माता-पिता का तिरस्कार करते हैं, आप जानते हैं, यह मूसा की तोरा, मूसा की शिक्षा के भीतर इतनी गंभीर बात है कि यह मृत्यु के योग्य है यदि वास्तव में, यह उस प्रकार का तिरस्कार है।

स्व-धार्मिकता, अहंकार और लालच एक जंगली जानवर की तरह हैं। और निश्चित रूप से ये लोग आपकी संपत्ति को किसी न किसी तरह से अपने कब्जे में ले लेते हैं। ये सभी चीजें गलत हैं और ये लोग, ज्ञान के लेखक कहते हैं, वे लोग हैं जो धन्य नहीं हैं।

और फिर अंत में, जोक के साथ लालच पर यह समापन शब्द। जोक के मानो दो मुँह होते हैं। मैं जोकों के बारे में बहुत अधिक नहीं समझता, लेकिन वे अपने पूरे शरीर से लालची हैं।

और इसलिए, जोक की बेटियाँ स्वयं जोक के समान हैं। वह एक तरह से उनकी हकदार थी। और उन्हें हमेशा अधिक की आवश्यकता होती है।

और इसलिए, यहाँ का बुद्धिमान लेखक, यहाँ का बुद्धिमान लेखक, हमें उन चीजों के उदाहरण देता है जो कभी पर्याप्त नहीं कहतीं। लालच कभी भी पर्याप्त नहीं कहता, जैसे शेओल कभी भी पर्याप्त नहीं कहता। चाहे कितने भी लोग मरें, यह पर्याप्त नहीं है।

वे मरते रहेंगे. अग्नि कभी भी पर्याप्त नहीं कहती। कितना भी जले, फिर भी और जलेगा।

बाँझपन एक ऐसा दर्द है जिसे आसानी से संतुष्ट नहीं किया जा सकता। यह कभी भी पर्याप्त नहीं कहता। यह कुछ ऐसा है जिससे निपटना एक पादरी के रूप में मेरे लिए हमेशा सबसे कठिन काम रहा है।

मृत्यु से निपटना एक बात है। और मैं बच्चों की मृत्यु से निपट चुका हूँ, यहाँ तक कि शिशुओं की भी। लेकिन बच्चा पैदा न कर पाने का दर्द, जबकि आप यही चाहते हैं, एक अलग स्तर का होता है।

मैं इसका वर्णन नहीं कर सकता। लेकिन एक पादरी के रूप में मैं आपको बता सकता हूँ कि इससे निपटने की कोशिश करना एक अलग तरह की चीज है। माता-पिता के प्रति तिरस्कार.

अक्सर जिस तरह से बच्चे माता-पिता के प्रति तिरस्कार दिखाते हैं, और हम इसे कभी-कभी बहुत भयानक मामलों में देखते हैं, जहाँ बच्चे अपने माता-पिता का पैसा चाहते हैं, जहाँ बच्चे अपने माता-पिता की संपत्ति चाहते हैं। और आपको उन अपराधों के बारे में पढ़ने के लिए बहुत दूर जाने की ज़रूरत नहीं है जहाँ बच्चे माता-पिता को मार देते हैं क्योंकि वे जो चाहते हैं वह उनकी संपत्ति है। इसकी तुलना लालची नजर से की जाती है।

जैसा कि यीशु ने मैथ्यू में बताया है, लालची आँख, लालची आँख से सावधान रहें। यह एक उद्धरण है जो विश्राम वर्ष के संबंध में व्यवस्थाविवरण अध्याय 15 से आता है। जब विश्राम वर्ष आ रहा हो, तो उदार बनें।

यह मत कहो, ओह, यह कर्ज सिर्फ एक साल में माफ हो जाएगा, और इसलिए मैं यह पैसा उधार नहीं दूंगा। नहीं, उस प्रकार के लालच से सावधान रहें। अपनी आँखों को लालची मत बनने दो।

और यहां कहावत है, वह लालची आंख घाटी पर उड़ने वाले गिद्ध द्वारा नोंच ली जाएगी। इस प्रकार का लालच बहुत विनाशकारी होता है। मुझे इनमें से कुछ नीतिवचन सबसे चुनौतीपूर्ण और कठिन लगते हैं क्योंकि यह निर्धारित करना बहुत कठिन है कि मुझे क्या चाहिए, इसके विपरीत कि मैं क्या चाहता हूँ।

उस कठिनाई का एक हिस्सा यह है कि कभी-कभी मुझे जो चाहिए वह वास्तव में बदलता रहता है क्योंकि मेरे आस-पास की दुनिया बदलती है और मेरे आस-पास का समाज बदलता है, और मुझे कार चलाने की आवश्यकता हो सकती है। यह ऐसा कुछ नहीं हो सकता जो एक विकल्प हो। और फिर भी, कुछ अन्य चीजें हैं जो मैं चाहता हूँ, और मेरे लिए, वे मेरे जीवन के लिए किसी भी अन्य चीज़ की तरह ही आवश्यक हैं।

और इसलिए, थोड़ा-बहुत तनाव हमेशा बना रहता है। लेकिन ये कहावतें याद दिलाती हैं कि हमें लगातार सावधान रहने की ज़रूरत है कि हम उन चीज़ों से नियंत्रित नहीं हो रहे हैं जिन्हें हम चाहते हैं। जैसा कि आगुर के शब्दों से शुरू होता है, याद दिलाया जा रहा है कि हम बहुत कम जानते हैं, और हम वास्तव में, व्यक्तियों के रूप में, बहुत सीमित और बहुत कमजोर हैं।

यह नीतिवचन की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. ऑगस्ट कोकैल हैं। यह सत्र संख्या 18 है, बुद्धि का चिंतन। नीतिवचन 30:1-17, परिशिष्ट।